SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

इण्डियन जर्नल्स ऑफ हॉटीकल्चर का विज्ञानमितीय विश्लेषण 2011–2017

माधुरी गौतम, (Ph.D.) सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
पं किशोरीलाल शुक्ला उद्या. महाविद्यालय, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
माधुरी गौतम, (Ph.D.) सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
पं किशोरीलाल शुक्ला उद्या. महाविद्यालय, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/04/2021
Revised on : -----
Accepted on : 08/04/2021
Plagiarism : 00% on 01/04/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

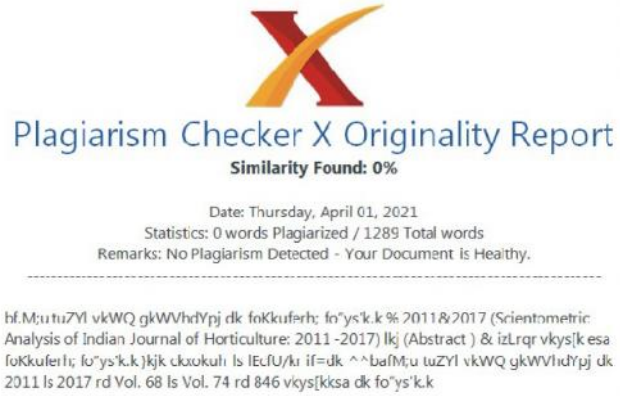

Date: Thursday, April 01, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 1289 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

bf.M;u tuZYl vkWQ gkWVhdYpj dk foKkuferh; fo"ys'k.k % 2011&2017 (Scientometric Analysis of Indian Journal of Horticulture: 2011 -2017) lkj (Abstract) & izLrqr vkys[k esa foKkuferh; fo"ys'k.k }kjk ckxokuh ls lEcfU/kr if=dk ^^baf M;u tuZYl vkWQ gkWVhdYpj dk 2011 ls 2017 rd Vol. 68 ls Vol. 74 rd 846 vkys[kksa dk fo"ys'k.k

शोध सार

प्रस्तुत आलेख में विज्ञानमितीय विश्लेषण द्वारा बागवानी से सम्बन्धित पत्रिका ''इंडियन जर्नल्स ऑफ हॉटीकल्चर का 2011 से 2017 तक Vol. 68 से Vol. 74 तक 846 आलेखों का विश्लेषण कर अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन द्वारा जर्नल्स में प्रकाशित आलेखों का वर्षानुसार अध्ययन, लेखकत्व प्रारूप एवं लेखों में सहकारक का दशा स्थिति को ज्ञात किया गया हैं।

मुख्य शब्द

ग्रंथमितीय, विज्ञानमितीय, लेखकत्व प्रारूप, लेखों की सहकारिता एवं इंडियन जर्नल्स ऑफ हॉटीकल्चर.

प्रस्तावना

विज्ञानमितीय अध्ययन ग्रंथमितीय की एक शाखा हैं। यह उन विषयों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण शोध उपकरण हैं, जिनका उद्देश्य प्रलेखों की उपयोगिता को मापना हैं। विज्ञानमितीय एक प्रकार की शोध पद्धति है जिसका उपयोग पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में किया जाता हैं। यह एक विषय पर साहित्य के विभिन्न पहलुओं के गणितीय और सॉख्यिकीय तरीकों का एक अनुप्रयोग है। इसका उपयोग ज्ञान के विकास की गतिशीलता में अंतदृष्टि प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रकाशन की विभिन्न क्षमताओं की पहचान के लिये किया जाता हैं। विज्ञानमितीय वैज्ञानिक अनुसंधान के मूल्यांकन के लिए उपकरण प्रदान करता हैं।

साहित्य की समीक्षा

लेखकों का कार्य या योगदान पिछला जो कि प्रस्तुत आलेख को तैयार करने में सहायता प्रदान करती हैं।

सिंह एवं अन्य (2008) का प्रस्तुत लेख में बागवानी से सम्बन्धित औषधीय एवं सुगठित पौधा सार, भारतीय

विज्ञान सार एवं जैविक सार डाटाबेस से 322 लेख को एकत्रित कर अध्ययन किया गया हैं। इस अध्ययन में साहित्य की वृद्धि, लेखक, पापुलर लेखक, विषय के मुख्य जर्नल्स, लोटका एवं ब्रेडफ्रोड लॉ का उपयोग किया गया है।

सुवासे (2008) का यह लेख. ग्रंथसूची (1982–2006) के अनुसार प्रकाशन उत्पादन से सम्बन्धित प्रकाशन उत्पादन में स्पंदित लेजर के क्षेत्र में विश्व साहित्य की मात्रात्मक वृद्धि और विकास पर केन्द्रित करता हैं। वैज्ञानिक द्वारा स्पंदित लेजर निक्षेपण में कुल 8534 लेख प्रकाशित किये गये थे। प्रति वर्ष प्रकाशित प्रकाशन की औसत संख्या 341.36 थी। सबसे अधिक लेखों की संख्या 1074, (2005) में प्रकाशित की गई। इस क्षेत्र में अनुसंधान में 84 देश शामिल थे। यू.एस.ए. 2014 प्रकाशनों के साथ शीर्ष उत्पादक देश है, 1985–2006 के 291 प्रकाशनों के साथ भारत का स्थान अन्य देशों के बीच 9 वां है।

बिरादार (2006) का यह लेख पर्यावरण संरक्षण के भारतीय जर्नल्स में प्रकाशित लेखों से संबंधित संदर्भो का एक अध्ययन हैं। यह अध्ययन 1994, 1999 और 2004 के दौरान पर्यावरण विषय के लेखक की प्रवृत्ति और सहयोगात्मक शोध पर प्रकाश डालता हैं। लेखों की सहकारिता की डिग्री का अध्ययन साल दर साल बदलता रहता है यह 0.78 से 0.95 तक पाया जाता है।

स्त्रोत जर्नल

इंडियन जर्नल ऑफ हॉटीकल्चर, भारतीय बागवानी सोसायटी का अधिकारिक प्रकाशन हैं। प्रति वर्ष 4 खंडो की संख्या जिसका प्रकाशन मार्च, जून, सितम्बर एवं दिसम्बर में होता है। यह बागवानी की सभी शाखाओं में मूल अनुसंधान और बागवानी विशेषज्ञों को प्राथमिक रूचि के द्वारा वैज्ञनिकता प्रदान करती है। भारतीय बागवानी सोसायटी की स्थापना जनवरी 1942 में हुई थी, जिसका उद्देश्य बागवानी और उससे सम्बन्धित शाखाओं में अनुसंधान, शिक्षा एवं विकास को बढ़ावा देना। व्यक्तिगत वैज्ञानिकों, अंतः विषय टीमों, मान्यता प्राप्त संस्थानों उद्योग के द्वारा बागवानी के क्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास में हासिल उत्कृष्टता को पहचानने और समर्थन के लिए हुआ है।

अध्ययन का उद्देश्य

- अनुसंधान प्रकाशनों के वर्षवार वितरण का निर्धारण करना
- लेखकत्व प्रारूप का निरीक्षण करना।
- लेखकत्व प्रारूप द्वारा लेखकों को रैकिंग प्रदान करना।
- एकल एवं बहुल लेखकों की संख्या एवं सहकारकों की दशा।
- सहकारिता का ज्ञात करना।

विधि

प्रस्तुत लेख विज्ञानमितीय अध्ययन पर आधारित है। इस विधि में किसी विषय या साहित्य के विभिन्न पक्षों का संख्यात्मक या गणनात्मक अध्ययन किया जाता है। इस लेखक में अध्ययन हेतु डेटा का संग्रह ऑनलाईन ओपन एक्सेस जर्नल्स ''इंडियन जर्नल्स ऑफ हॉटीकल्चर'' को वर्ष 2011 से 2017 के डाटा को लिया गया है एवं इसका लेखकत्व प्रारूप एवं सहकारकों की दशास्थिति का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन की सीमा

इंडियन जर्नल्स ऑफ हॉटिकल्चर मुख्य रूप से शोध लेखों को प्रकाशित करता हैं जो अनुसंधान करने में वैज्ञानिक की मदद करता हैं। यह अध्ययन के 2011 से 2017 तक 7 साल की अवधि तक सीमित है।

परिणाम एवं विश्लेषण

प्रकाशित लेख का वर्षानुसार वितरण।

तालिका क्रमांक 1 : प्रकाशित लेख का वर्षानुसार वितरण

क्रमांक	वर्ष	खण्ड संख्या	अंक संख्या	लेखों की संख्या	प्रतिशत
1	2011	68	4	121	14.30
2	2012	69	4	120	14.18
3	2013	70	4	120	14.18
4	2014	71	4	120	14.18
5	2015	72	4	120	14.18
6	2016	73	4	123	14.53
7	2017	74	4	122	14.52
	कुल	**07**	**28**	**846**	**100.00**

(स्त्रोत : Indian Journal of Horticulture)

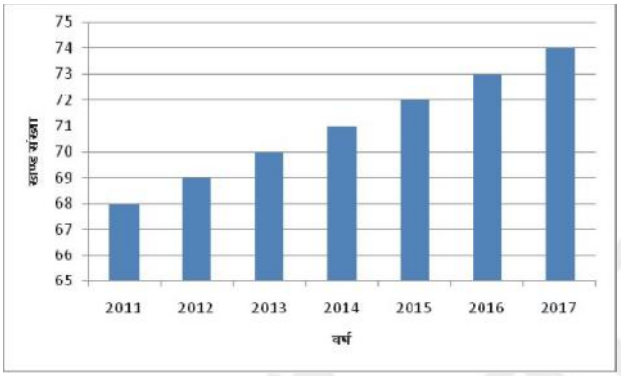

तलिका क्रमांक 1 का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि इंडियन जर्नल्स ऑफ हॉटीकल्चर का वर्ष 2011 से 2017 तक कुल 846 लेख प्रकाशित हुये हैं जिसके सबसे अधिक 2016 को 123 लेख एवं बाकी वर्षो में लेखों की संख्या एक समान हैं।

तालिका क्रमांक 2 : लेखकत्व प्रारूप का वर्षानुसार वितरण

क्रमांक	वर्ष	एकल लेखक	दो लेखक	तीन लेखक	तीन से अधिक लेखक	कुल	प्रतिशत
1	2011	6	28	38	49	121	14.30
2	2012	1	22	39	58	120	14.18
3	2013	4	17	31	68	120	14.18
4	2014	1	22	22	75	120	14.18
5	2015	2	26	32	60	120	14.18
6	2016	2	22	30	69	123	14.53
7	2017	2	18	36	66	122	14.42
	कुल	**18**	**155**	**228**	**445**	**846**	**100.00**

(स्त्रोत : Indian Journal of Horticulture)

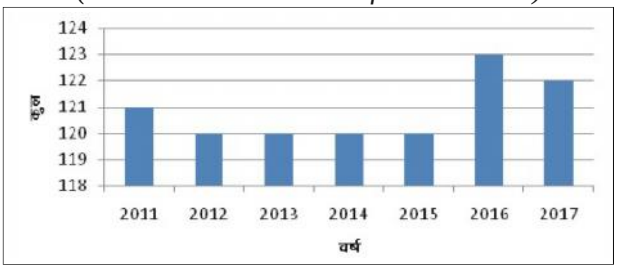

तलिका क्रमांक 2 का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि वर्षानुसार लेखकत्व प्रारूप में 2011 में 121 लेखों का योगदान था, 2012 से लेकर 2015 तक 120 लेखकों का योगदान था एवं 2016 में 123 लेखकों का योगदान था।

तालिका क्रमांक 3 : लेखकत्व प्रारूप की श्रेणीबद्धता

क्रमांक	श्रेणी	लेखकत्व प्रारूप	लेखकत्व संख्या	प्रतिशत	संचयी योगदान	प्रतिशत संचयी योगदान
1	4	एकल लेखक	18	02.12	018	2.12
2	3	दो लेखक	155	18.32	173	20.44
3	2	तीन लेखक	228	26.95	401	47.39
4	1	तीन से अधिक लेखक	445	52.60	846	100.00

(स्त्रोत : Indian Journal of Horticulture)

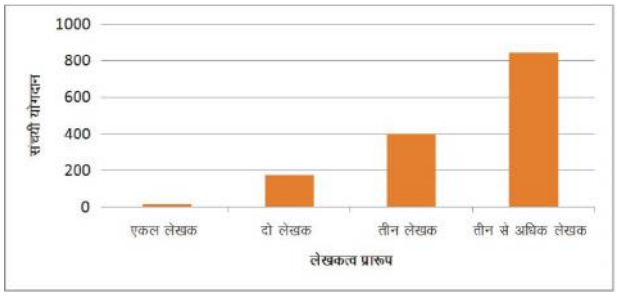

तलिका क्रमांक 3 का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि लेखकत्व प्रारूप में तीन से अधिक लेखकों की संख्या सर्वाधिक हैं जो किसी लेख को लिखते है, ये संख्या 445 है, इसकी श्रेणी प्रथम है। उसके बाद तीन लेखकों की संख्या 228 हैं, द्वितीय श्रेणी में है। उसके बाद दो लेखकों की संख्या 155 है, ये श्रेणी बद्धता में तृतीय स्थान पर है। सबसे अंत में एकल लेखकों की संख्या 18 हैं, जो चतुर्थ स्थान पर हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि आज ज्यादातर लेख, बहुलेखकों द्वारा लिखे जाते है।

तालिका क्रमांक 4 : वर्षानुसार एकल लेखक एवं बहुलेखक का योगदान

क्रमांक	वर्ष	एकल लेखक	बहु लेखक	कुल
1	2011	06 (0.70)	115 (13.59)	121 (14.30)
2	2012	01 (0.11)	119 (14.06)	120 (14.18)
3	2013	04 (0.47)	116 (13.71)	120 (14.18)
4	2014	01 (0.11)	119 (14.06)	120 (14.18)
5	2015	02 (0.23)	118 (13.94)	120 (14.18)
6	2016	02 (0.23)	121 (14.30)	123 (14.53)
7	2017	02 (0.23)	120 (14.18)	122 (14.42)
	कुल	**18 (2.12)**	**828 (97.87)**	**846(100.00)**

(स्त्रोत : Indian Journal of Horticulture)

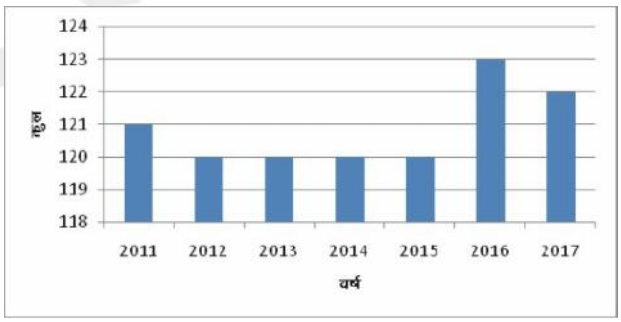

तलिका क्रमांक 4 का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि एकल लेखक द्वारा बहुत ही कम लेख लिखे गये कुल 18 (2.12) एवं बाकि 828 (97.87) लेख, बहु लेखकों द्वारा लिखे गये इन वर्षो (2011 से 2017 तक) में।

सहकारकों की दशा

सहकारकों की दशा ज्ञात करने के लिए के. सुब्रामणियम द्वारा दिये गये फार्मूला का उपयोग करते है जो इस प्रकार है :

$$C = \frac{Nm}{Nm+Ns.}$$

C – सहकारकों की दशा,
Nm – बहुलेखकों की संख्या, Ns – एकल लेखकों की संख्या

तालिका क्रमांक 5 : सहकारकों की दशा

क्रमांक	वर्ष	सहकारकों की दशा
1	2011	0.95
2	2012	0.99
3	2013	0.96
4	2014	0.99
5	2015	0.98
6	2016	0.98
7	2017	0.98

(स्त्रोत : Indian Journal of Horticulture)

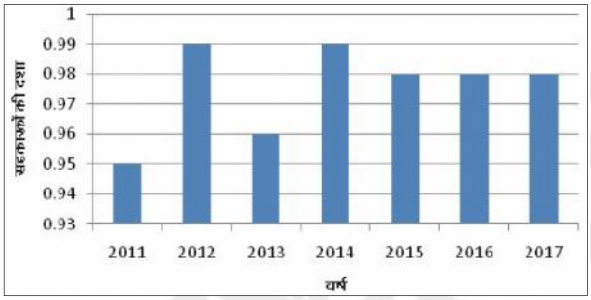

तालिका क्रमांक 5 का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि इन सात वर्षो में इंडियन जर्नल्स ऑफ हॉटीकल्चर में सहकारकों की दशा स्थिति एक समान ही रही हैं, विशेषकर वर्ष 2014 से 2017 तक।

परिणाम एवं निष्कर्ष

इस अध्ययन से पता चलता है कि सबसे अधिक लेख वर्ष 2016 में प्रकाशित हुये। लेखकत्व प्रारूप में एकल लेखक की संख्या 18, दो लेखकों की संख्या 155 (18.32), तीन लेखकों की संख्या 228 (26.95), एवं तीन से अधिक लेखकों की संख्या 445 (52.60) हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि आज के समय में एक से अधिक लेखक द्वारा लेखों को लिखा जाता है। लेखकत्व के श्रेणीबद्धता में 445 लेखों के साथ तीन से अधिक लेखक को प्रथम श्रेणी दिया गया हैं। एकल लेखक का योगदान कुल 846 लेखों में 2.12 प्रतिशत है एवं बहुलेखकों का योगदान 97.87 प्रतिशत हैं। सहकारकों की दशा स्थिति में वर्ष 2014 से 2017 तक एक समान 0.98 हैं।

संदर्भ सूची

1. बिरादार, बी.एस., (2006) *''इंडियन जर्नल्स ऑफ एनवार्यनमेंट प्रोटेक्शन ए स्टडी ऑफ साइटेशन पैटर्न''* एनलस ऑफ लाइब्रेरी एवं इंफार्मेशन स्टडीज. 53 (3), 109–313. प्रिंट
2. सुवासे, गणेश (2008), *''स्पंदित लेजर जमाव अनुसंधान के वैज्ञानिक आयाम : वैश्विक परिपेक्ष्य''* एनलस ऑफ लाइब्रेरी एण्ड इंफार्मेशन स्टडीज . 55 (2)रू 101–110. प्रिंट
3. www.http://Indianjournalofhorticulture.online 2012-2017
4. सिंह, कुंवर पी. (2011), *डेसीडॉक बुलेटिन ऑफ इंफार्मेशन टेक्नोलॉजी एक बिब्लियोमेट्रिक स्टडी''* सेल्स जर्नल्स ऑफ इंफार्मेशन मैनेजमेंट 48 (1), 57–58 प्रिंट.

****